## 1.3.3 Percentage of students undertaking project work/field work/internship (Data for the latest completed academic year) (10)

| Programme name | Program Code | | List of students undertaking project work/field work/internship | Link to the relevant document |
|---|---|---|---|---|
| B.A II | सांडपाणी व्यवस्थापन | 1 | Vijaysinh Kundalik Chavan | |
| | | 2 | Samarth Ashok Kambale | |
| | | 3 | Anand Sanajy Pawar | |
| | | 4 | Rutuja Kishor Gate | |
| | | 5 | Anand Shivaji Landage | |
| | कारंबा गावातील पिण्याचे पाणी व सांडपाण्याची व्यवस्था | | | |
| | | 6 | Sagar Nagnath Kamble | |
| | | 7 | Sanket Sunil Kshirsagar | |
| | | 8 | Gayatri Bapu Jambhale | |
| | | 9 | Mayuri Mukund Sathe | |
| | | 10 | Dnyaneshwar Baliram Gavali | |
| | रोपवाटिकेचे(नर्सरी) महत्व | | | |
| | | 11 | Bhagwan Shankar Pawar | |
| | | 12 | Priti Ganpat Nengare | |
| | | 13 | Radhika Sopan Pawar | |
| | | 14 | Snehal Bhagawat Jamdade | |
| | | 15 | Mrunali Prakash Lungase | |
| | स्मशानभूमीचे स्वरुप व महत्व | | | |
| | | 16 | Karishma Khajamiya Shaikh Mulani | |
| | | 17 | Aadesh Santosh Phadake | |
| | | 18 | Mangal Shivaji Arjun | |
| | | 19 | Sneha Prabhakar Gaikwad | |
| | | 20 | Pratiksha Rajendra Mudake | |
| | प्रदुषण व त्याचे प्रकार | | | |
| | | 21 | Suchita Suresh Patil | |
| | | 22 | Shubham Umesh Kshirsagar | |
| | | 23 | Atul Satish Kulkarni | |
| | | 24 | Ajit Vijay Gajghate | |
| | | 25 | Pooja Vijay Gajghate | |
| | वडाळा गावातील जलसंधारण | | | |
| | | 26 | Prajakta Anand Gaikwad | |
| | | 27 | Akash Navnath Mali | |
| | | 28 | Vishal Nandkumar Surwase | |
| | | 29 | Prakash Vikas Sathe | |
| | | 30 | Rakesh Uttam Gholap | |
| | घनकचरा व्यवस्थापन | | | |

Mauli Mahavidyalaya * Wadala * EST 2000

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | 31 | Suvarna Rambahu Gavali | |
| | | 32 | Pooja Shrikanat More | |
| | | 33 | Amruta Nagnath Magar | |
| | | 34 | Dhanashri Naganath Dade | |
| | | 35 | Manjusha Sambhaji Gajghate | |
| | औषधी वनस्पतीचे फायदे | | | |
| | | 36 | Ashitosh Rajiv Chavan | |
| | | 37 | Budhabhushan Pradip Gajghate | |
| | | 38 | Narayan Laxman Gavali | |
| | | 39 | Mohini Balaji Gund | |
| | | 40 | Anil Raju Rathod | |
| | वनसंवर्धन काळाची गरज | | | |
| | | 41 | Swati Sunil Raut | |
| | | 42 | Swapnali Bharat Pawar | |
| | | 43 | Vaishali Bhagwan Kale | |
| | | 44 | Yashwanti Sanjay Mule | |
| | | 45 | Suvarna Dnyandev Mohite | |
| | माळढोक पक्षी-संवर्धन व संरक्षण | | | |
| | | 46 | Ananda Navnath Waghmare | |
| | | 47 | Jagruti Jayaram Ingale | |
| | | 48 | Suraj Shrikant Durlekar | |
| | | 49 | Nikita Vijay Sathe | |
| | | 50 | Rajshri Jaysing Sathe | |
| | पर्यावरण -हास व संवर्धन | | | |
| | | 51 | Tushar Tukaram Dagade | |
| | | 52 | Karina Vijaysinh Ghodake | |
| | | 53 | Nitin Nagnath Nakate | |
| | | 54 | Sonam Masaji Kasabe | |
| | | 55 | Ajay Dattatray Veer | |
| | सोलापूर शहरातील प्रदूषणाचा अभ्यास | | | |
| | | 56 | Pratiksha Prakash Ghatole | |
| | | 57 | Pakija Khajamiya Shaikh Mulani | |
| | | 58 | Somnath Dahnraj Kamble | |
| | | 59 | Rutuja Ramchandra Deshmukh | |
| | | 60 | Babruvan Sandipan Irkar | |
| | | 61 | Yogesh Chandrakant Nagane | |
| B.Sc II | Various Crops and Nature of Agricultural Systems | | | |
| | | 62 | Phand Shivani Ramchandra | |
| | | 63 | Dhavane Pratik Dhananjay | |
| | | 64 | Beg Imran Rafik | |
| | | 65 | Kamble Pratik Laxman | |
| | | 66 | Gujar Megh Jayhind | |

Mauli Mahavidyalaya ★ Wadala ★ EST 2000

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | 67 | Mane Adarsh Prabhakar | |
| | | 68 | Akkalkote Shubham Maharudra | |
| | | 69 | Kote Sankalp Mallikarjun | |
| | | 70 | Deshmukh Gurunath Shatrughn | |
| | | 71 | Inamdar Haridas Dnyneshwar | |
| | The importance of Medicinal Plant | | | |
| | | 72 | Deshmukh Ruturaj Ravindra | |
| | | 73 | Kore Sanket Yallapa | |
| | | 74 | Dure Bhawana Nanasaheb | |
| | | 75 | Kadam Ankita Dasharath | |
| | | 76 | Shaikh Abdulmatin Siraj | |
| | | 77 | Bhosale Dattatray Balu | |
| | | 78 | Dhavane Vishakha Vishwanath | |
| | | 79 | Avatade Vilas Abasaheb | |
| | | 80 | Varpe Shubham Satish | |
| | | 81 | Maske Rohan Mittu | |
| | Global Warming | | | |
| | | 82 | Gaikwad Vijay Dattatray | |
| | | 83 | Gaikwad Pratik Bodhiprakash | |
| | | 84 | Mutkule Kartik Ankush | |
| | | 85 | Khatib Kalim Ilahi | |
| | | 86 | Inamdar Jaysinh Jyotiram | |
| | | 87 | Tonape Pooja Malhari | |
| | | 88 | Patil Vidya Balasaheb | |
| | | 89 | Garad Suyash Manik | |
| | | 90 | Mali Sanjana Bapurao | |
| | | 91 | Umbare Aniket Vitthal | |
| | Green House Effect | | | |
| | | 92 | Todkar Dipali Dilip | |
| | | 93 | Chunge Aishwarya Tanaji | |
| | | 94 | Lokare Pooja Shrimant | |
| | | 95 | Patil Vaishnavi Nanasaheb | |
| | | 96 | Subhedar Shekhar Sukhadeo | |
| | | 97 | Sathe Yogesh Jeevan | |
| | | 98 | Sakhare Krushnat Balasaheb | |
| | | 99 | Mali Sahubai Laxman | |
| | | 100 | Nagtilak Amarja Tanaji | |
| | | 101 | Patil Vishal Vilas | |

Mauli Mahavidyalaya ★ Wadala ★ EST 2000

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | Water Conservation and waste water treatment | | | |
| | | 102 | Koli Manoj Raju | |
| | | 103 | Pakhare Rohit Balasaheb | |
| | | 104 | Mane Nikita Sunil | |
| | | 105 | Waghamare Aishwarya Mahaling | |
| | | 106 | Galande Rajkumar Dilip | |
| | | 107 | Pawar Arati Pandurang | |
| | | 108 | Kamble Pallavi Laxman | |
| | | 109 | Ghodake Shivani Shivaji | |
| | | 110 | Sirsat Dinesh Dadarao | |
| | | 111 | Mule Priyanka Rajendra | |
| | Nursery study | | | |
| | | 112 | Subhedar Uma Jalindra | |
| | | 113 | Mulani Lucky Haidar | |
| | | 114 | Sagar Ajay Dattatray | |
| | | 115 | Nagtilak Pradnya Pravin | |
| | | 116 | Surywanshi Shambhuraje Balasaheb | |
| | | 117 | Kore Bhakti Mallinath | |
| | | 118 | Gavali Nagesh Suresh | |
| | | 119 | Bhosale Apeksha Dattatray | |
| | | 120 | Deshmane Shraddha Kailas | |
| | | 121 | Inamdar Suraj Mohan | |
| | | 122 | Panke Akansha Rajendra | |
| | | 123 | Dond Ankita Hanumant | |
| B.A I,II,III | शब्दयात्रा | | | |
| | | 124 | राजकुमार मनोज मुळे | |
| | | 125 | प्रतिक्षा पांडुरंग सुरवसे | |
| | | 126 | रजनी राजेंद्र माने | |
| | | 127 | पूजा श्रीकांत मोरे | |
| | | 128 | विजयालक्ष्मी तुकाराम सुर्वे | |
| | | 129 | अमृता अरूण गायकवाड | |
| | | 130 | प्रताप श्रीमंत गवळी | |

Mauli Mahavidyalaya Wadala EST 2000

Principal
Mauli Mahavidyalaya, Wadala
Tal-N Solapur Dist. Solapur

Page No. Date

# MAULI MAHAVIDYALAYA WADALA

Student Name - Dhavane Vishakha Vishwanath

Roll No -

Project Title - The Importance of Medicinal plant

class - B.Sc. II (2019-20)

Guidance - Dr. Harwalkar D. S.

Mauli Mahavidyalaya * Wadala * EST 2000

colors

Date: / / Page

# Index


| Sr. No. | Name | page No. |
| --- | --- | --- |
| 1 | Introduction | 1 |
| 2. | Aim & object | 2 |
| 3. | Conclusion | 3 |
| 4 | Reasearch methalogy | 4 |
| 5. | Analysis of project | 5-15 |


Sign. :

SUN-DEEP

## Aim :—

I. To raise environmental awarness about medicinal plant

II To study medicinal plant.

III understanding & knowledge about envir onmental medicinal plant.

IV To know about healthy importance of medicinal plant.

V. To develop a world in which person are aware of and concerned about environment & problems associated with it.

* Mauli Mahavidyalaya * Vadala EST 2000

Sign. :

SUN-DEEP

# ReaSearch Methadalogy.

① Around the house -
In India, In every house Tulsi is planted. So. I can see this plant in my house are as well as in my friend house.

② In farm -
I can see & study lemon grass plant in my farm & in my friend farm. The growth of these plant is fastely. These plant are food for animal. So farmer planted these plant.

③ other plant I can see in forest. The forest is neart the my home.

Mauli Mahavidyalaya Wadala EST 2000

Sign.: ____

Page No. Date

# माऊली महाविद्यालय वडाळा

नांव:- कु. करिश्मा शेख

वर्ग:- B.A.- II

रोल.नं:- 321

विषय:- पर्यावरण अभ्यास

मार्गदर्शक - डॉ. हरवाळकर डी.एच.

"स्मशानभूमीचे स्वरूप व महत्व"

* Mauli Mahavidyalaya Wadala * EST 2000

TOPIC



DATE

देश आहे. भारताची संस्कृती ही फार जुनी आहे. भारता मध्ये एकुण ७६ संस्कृती प्रचलित आहेत. त्यापैकी एक महत्त्वाचा संस्कार म्हणजे अंत्यसंस्कार होय होय अंत्यसंस्कार करण्यासाठी विधी पद्धती पार पाडण्यासाठी समशानभूमीची अत्यंत गरज असते या समशानभूमीत अनेक प्रेतांना जाळले जाते अथवा पुरले जाते. समशान भूमी स्मशानांचे परिसर यामुळे पर्यावरणावर याचा विपरीत परिणाम घडतो का? याबद्दल जाणून घेण्याची उत्सुकता आमच्या मनाला लागली आहे. म्हणून आम्ही Project साठी स्मशान भूमी हा विषय निवडला हा विषय आम्हाला इतराहून वेगळा वाटला म्हणून आम्ही त्याची निवड केली. या प्रोजेक्ट वरती काम करण्यासाठी प्रा. शह सर, प्रा. आवटे, प्रा. थायगुडे सर व प्रा डॉ. चव्हाण सर यांनी आम्हाला मोलाचे मार्गदर्शन केले. आम्ही त्यांचे खुप आभारी आहोत.

प्रोजेक्ट ची सुरवात आम्ही ख्रिश्चन कब्रस्थान पासून सुरू केली. या कब्रस्थानात युसूफ भोजे नावाचे संग्रहस्थाने आम्ही विचारलेल्या सर्व प्रश्नांची उत्तरे निःसंकोचपणे दिली त्यांच्या ट्रस्टची मुख्य मोहन भगारे यांनीही ट्रस्टची सुरुवात कधी झाली त्यांच्या धर्मात कोणकोणत्या प्रथांचा वापर केला जातो. युसिफ भोजे यांनी मृतदेह पुरण्याची पद्धत, त्यांचा पगार, कौटुंबिक जीवन, भूतप्रेतावरती असणारा विश्वास यांनी आपल्या बोलण्यातून व्यक्त केला तसेच माझे मित्र मौलिण यांनीही Project पुर्ण करण्यासाठी घेतलेले परिश्रम फार [illegible] आहे त्यांचे मी मनापासून आभार मानतो.

Mauli Mahavidy… EST 2000

Attitude



FOR EDUCATIONAL PURPOSE

TOPIC



DATE

~~देश आहे भारताची~~

## प्रास्ताविक :-

आजचे युग हे विज्ञान युग आहे ह्या विज्ञान युगात मानव हा जलदशील झाला आहे सर्व सुख सोईच्या तो इतका अहारी गेला आहे कि तो त्या सुंदर अश्या पर्यावरणाचे नाससुध्दा करतो आहे. स्वतःच्या सुखासाठी तो. अल्प प्रमाणात असलेले खनिज तेल. याचाही आवाजवी वापर करत आहे. त्यामुळे ति साधन संपत्ती लोपपावण्याच्या मार्गावर आहे. लोकसंख्या वाढल्यामुळे जंगलाचे प्रमाण कमी होत चालले आहे. जंगले तूटर करुण तेथे इमारती बांधण्यात येत आहेत.

याचा परिणाम पर्जन्यावर झाला आहे. पर्जन्याच्या प्रमाणात घट झाल्या मुळे अन्नधान्याच्या उत्पादनात घट झाली आहे. परिणामी, दुष्काळ, उपासमारी होत आहे. अवर्षण स्थिती निर्माण होत आहे. जिवनचक्र हे पुर्णतः जलचक्रावर अवलंबून आहे. जिवन चक्र चालू ठेवायचे असेल तर जलचक्राचे महत्व समजावून घावे लागेल.

मनुष्याचे जिवन सुखी राखण्या साठी पर्यावरणाचे संतुलण राखने ही प्रत्येक नागरिकांचे कर्तव्य आहेस तेव्हाच आपला भारत देश " सुजलम सुफलम " होईल यात शंकाच नाही स्मशानभुमीत आम्हाला आवड निर्माण झाली म्हणून आम्ही Project स्मशानभुमी निवडला.

Mauli Mahavidyalaya EST 2000 Wadala

FOR EDUCATIONAL PURPOSE

मृतदेहाच्या नातेवाईका शिवाय कोणालाही येण्यात परवानगी देऊ नये. स्थानिक लोकांना प्रवेश देऊ नये.

(४) स्मशान भूमीत शौचालयास, बसण्यास केरकचरा टाकण्यास मनाई करणे. तसे केल्यास त्याच्यावर दंडात्मक कारवाई आहे.

५ ख्रिश्चन स्मशानभूमीत राहण्याची गैरसोय आहे. त्याच्या घरावरती पत्रे खूप जुनी आहेत. त्यांना छिद्रे पडलेली आहेत. पावसाळ्यात होणाऱ्या पावसामुळे ते पाणी घरात येऊन पाण्याचे संचयन होऊन काही कालाने डासांची निर्मिती होऊन त्या डासांमुळे मलेरिया, टायफाईड, हिवताप होऊ शकतो. म्हणून त्या घरावरती चांगल्या चांगल्या प्रकारचे पत्रे बसवणे आवश्यक आहे. तेथे शौच्यालयाची, आंघोळीची व्यवस्था नाही. इतरत्र ठिकाणी शौचालय, आंघोळ केल्यास सांडपाणी व्यवस्थित विल्हेवार लावता येत नाही. त्यामुळे अशुद्ध पाण्या मार्फत डासांचा प्रसार होवून रोगराई निर्माण होते. त्यामुळे शौचाल्याची, आंघोळीची योग्य व्यवस्था करणे हे ट्रस्टचे प्रमुख कार्य आहे.

Mauli Mahavidyalaya EST 2000

माऊली महाविद्यालय वडाळा

नांव:- कु. घाटोळे प्रतिक्षा प्रकाश

वर्ग - B.A:- II

रोल.नं. - 363

विषय:- पर्यावरण अभ्यास

शै.वर्ष- 2019-20

" सोलापूर शहरातील प्रदुषणाचा अभ्यास "

Mauli Mahavidyalaya Wadala EST 2000

TOPIC

PAGE NO.

DATE

# अनुक्रमणिका


| अ.क्र | मुद्दे | | |
|---|---|---|---|
| 1 | प्रस्तावना | | |
| 2. | उद्देश | | |
| 3 | अभ्यास पध्दती | | |
| 4. | अभ्यासाचे क्षेत्र | | |
| 5. | सोलापूर शहरातील वाढती पर्यावरण प्रदूषण स्थिती व परिणाम | | |
| 6. | निष्कर्ष | | |
| 7. | प्रदूषणाचे परिणाम | | |
| 8. | प्रदूषणावरील उपाय . | | |
| 9. | संदर्भग्रंथ सूची | | |
| 10 | प्रश्नावली . | | |



* Mauli Mahavidyalaya * Wadala EST 2000

TOPIC

# प्रस्तावना

PAGE NO.

DATE

पर्यावरण ही संकल्पना शास्त्रीयदृष्ट्या बहुव्यापक व बहुसमावेशक व बरीच गुंतागुंतीची आहे. उत्पत्तीशास्त्राच्या दृष्टीने पर्यावरण म्हणजे पृथ्वीवरील विविध भागांशी निगडीत असलेली सभोवतालची परिस्थिती होय. म्हणजे Environ या फ्रेंच शब्दापासून इंग्रजीत To Surround असा शब्द प्रचलित झाला. यालाच Environment असे म्हणतात. मराठीत 'पर्यावरण' असे म्हणतात. पर्यावरण हा शब्द परि + आवरण हे दोन शब्द मिळून झाला आहे. परि म्हणजे सभोवताली आणि आवरण म्हणजे आच्छादन किंवा स्थिती होय. थोडक्यात 'पर्यावरण' म्हणजे सभोवतालची परिस्थिती होय. अशी पर्यावरणाची सोपी व्याख्या केली जाते.

आधुनिक काळात पर्यावरण हा विषय बहुचर्चित झाला आहे. वाढते औद्योगिकरण इ. मुळे पर्यावरणाचा समतोल स्थिर होण्यासाठी ते स्थिर ठेवण्यासाठी पर्यावरणाचे समतोल रक्षण करणे ही आजची गरज बनली आहे. त्यामुळे सुप्रिम कोर्टाने पर्यावरण हा विषय शाळा व महाविद्यालयातून शिकवण्यात येवू लागला. पर्यावरण म्हणजे सभोवतालची परिस्थिती आणि वातावरण होय. त्यामुळे पर्यावरणाचा अभ्यास केवळ पुस्तकातून न करता सर्वेक्षण आणि प्रत्यक्ष पाहणी करून दिसून आलेले दोष व उणिवा दूर करणे ही आजच्या काळाची पर्यावरण संरक्षणाच्या दृष्टीने गरज आहे.

सोलापूर शहरातील 'भवानी पेठ' परिसरातील पर्यावरणाच्या प्रदूषणाच्या स्थितीचे व त्याच्या परिणामाचा अभ्यास करून उपाय योजना करण्यात यावात यासाठी आपण सारे प्रयत्नवान राहणे आज गरजेचे बनलेले आहे

Artitude

FOR EDUCATIONAL PURPOSE

TOPIC
PAGE NO.
DATE

# * संदर्भग्रंथसूची *


1. पर्यावरण विज्ञान :- आदित्यराव आलीशा

2. वेध पर्यावरणाचा :- निरंजन घाटे
   [मेहता पब्लिशिंग]

3. पर्यावरण अभ्यास :- डॉ. सुरेश फुले
   [विद्याभारती प्रकाशन]

4. पर्यावरण शास्त्र :- एरक भारुचा
   [ओरिएंट लॉगमन]
   मराठी अनुवाद डॉ. विद्या विनायकवर्वे

5. पर्यावरण शास्त्र :- सोलापूर विद्यापीठ

6. पर्यावरण भूगोल :- डॉ. प्रकाश सावंत.

7. दै. वर्तमानपत्रे :- दै. संचार, लोकमत, तरुण भारत,
   पुढारी, सकाळ, लोकसत्ता इ.


Attitude
FOR EDUCATIONAL PURPOSE

TOPIC

PAGE NO.

DATE

# * प्रश्नावली *

① कुटुंबप्रमुखाचे नाव :- श्री अविनाश श्रीनिवास पुढ्डर

② कुटुंबातील सदस्यसंख्या :- स्त्री [3] पुरुष [2]

③ आपणास पर्यावरणाविषयी माहिती आहे ?. – होय

④ पर्यावरणाच्या कोणकोणत्या प्रदूषणाची माहिती आहे ?
→ वायू आणि पाणी प्रदूषण।

⑤ प्रदूषणाचे कोणकोणते परिणाम होतात ?
→ दमा, खोकला यासारखे रोग होतात

⑥ सर्वात जास्त घातक प्रदूषण कोणते ?
→ वायू प्रदूषण।

⑦ आपल्या कुटुंबाला प्रदूषणाचे परिणाम झाले आहेत का ?
→ नाही .

⑧ प्रदूषण टाळण्यासाठी आपण काय कराल ?
→ प्रत्येक गोष्टीचा काळजीपूर्वक वापर करणे हा उपाय।

⑨ प्रदूषणाचे प्रकार कोणते आहेत ?
→ प्रदूषणाचे जल, वायू, ध्वनी हे प्रकार आहेत

⑩ तुम्ही प्रदूषण कमी करण्यासाठी कोणत्या संस्थेची मदत घेता का ?
→ हो, त्या संस्थेला आम्ही कळवला देतो

⑪ प्रदूषणाचे कोणते परिणाम आपल्या जीवनात झालेले आहेत ?
→ काहींना दमा झालेला आहे. काही थोडे झालेले आहेत

* Mahavidyalaya Wadala * 2000 *

Page No.: Date :

Name - Kore Bhakti Mallinath

Class - B.Sc. II

(2019-20)

Title - Nursery Study

Mauli Mahavidyalaya * Wadala
EST 2000

colors

# Introduction :-

Nursery is consequntly the basic need of horticulture. plant propagation techniques & practices is the core of horticulture nurseries. The planting materials for horticulture plantation are raised from seeds and vegetative parts. Role of mother plants is very primary and important. The fate of nursery depends on quality and truthfulness of mother plants. A good nursery entrepreneur does not depend on others for procurement of mother plant. Mother plants are required for both stock and scion. Mother plants should be selected ~~be~~ on the basis of its genetic traits and other factors like ~~avat~~ availability and adapation in the growing enviroment.

Mauli Mahavidyalaya Wadala EST 2000

AVENGERS
colurs
GOLD
PPOG_11

Topic :



# Analysis :-

A place where plant are grown commercially, either for sale direct to the public or to other retailers. or

An area where we grow and nurse young progeny of plant is called Nursery.

~~Five type~~ Nursery is five types.

1) Fruit plant nurseries
2) Vegetable nurseries
3) Ornamental plant nurseries
4) Medicinal and Aromatic plant nurseries
5] Hi-Tech nurseries.

Important role of nurseries horticulture development.

Mauli Mahavidyalaya EST 2000 Wadala

AVENGERS
colurs
GOLD

Topic:



# Flow Chart

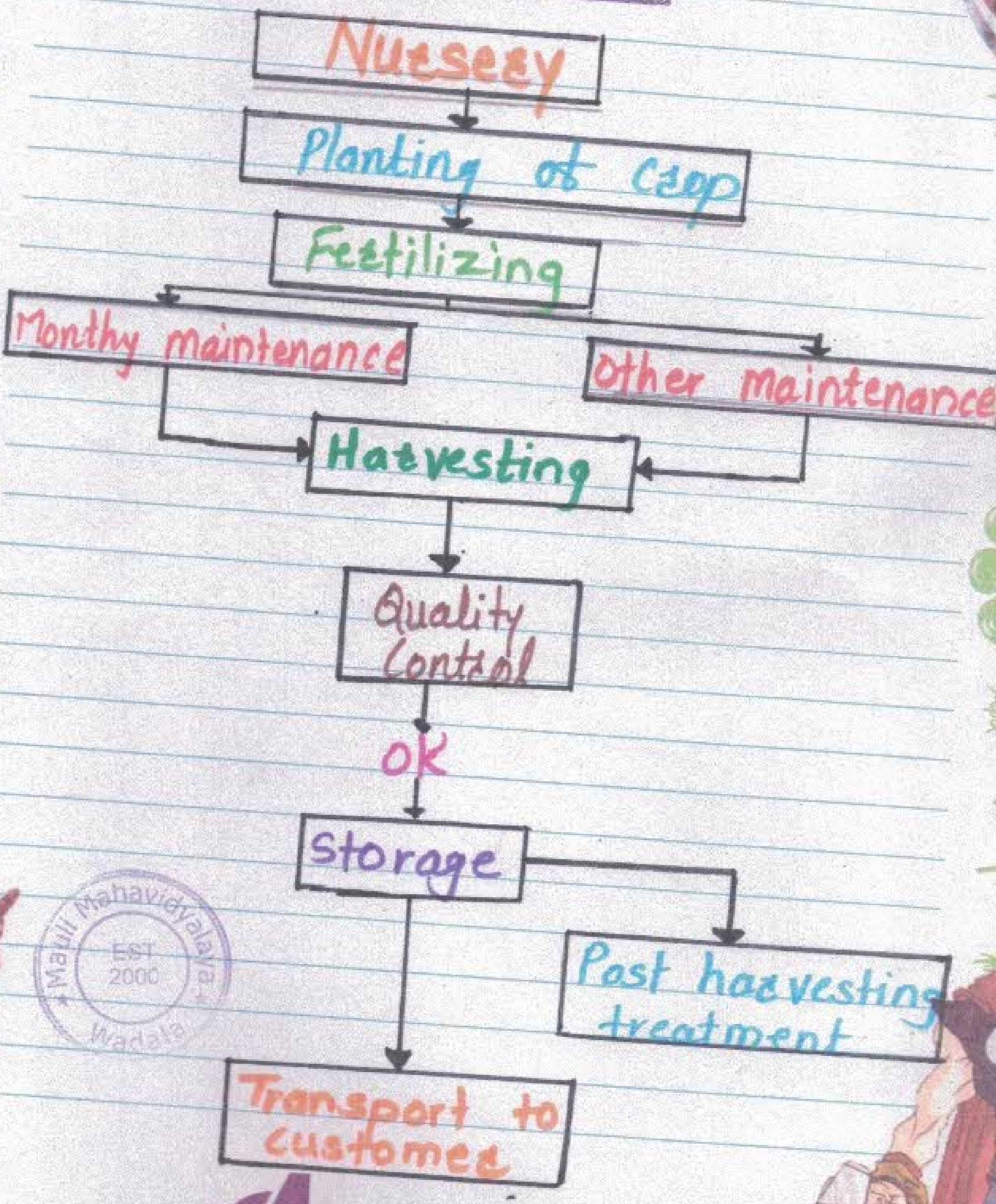


Mauli Mahavidyalaya Wadala EST 2000

AVENGERS
colurs
GOLD

# माऊली महाविद्यालय, वडाळा

## मराठी विभाग

## प्रकल्प

२०१९-२०

# शब्दयात्रा

* Mauli Mahavidyalaya Wadala * EST 2000

मार्गदर्शक

डॉ. सुवर्णा गुंड

Co-Ordinator
IQAC
Mauli Mahavidyalaya Wadala Tal-N.Solapur

संपादक मंडळ

१) संपादक — राजकुमार मनोज मुळे - BA-III
२) सदस्य — प्रतिक्षा प्रेमा सुरवसे - BA-III
३) —॥— माने रश्मि राजेंद्र — BA-III
४) —॥— पूजा श्रीकांत मोरे — BA II
५) —॥— विजयालक्ष्मी तुकाराम सुर्वे - BA II
६) —॥— अमृता अरुण गायकवाड - BA-I
७) —॥— प्रताप श्रीमंत गवळी - BA-I

सौ. गुंड एस. एस.

Principal

# अहवाल

सन २०१९-२० मधील प्रकल्प 'शब्दयात्रा' आहे. शब्दयात्रा हे 'सकाळ' दैनिकातील एक सदर आहे हे मराठी भाषेतील शब्दांचा अर्थ, अर्थछटा, त्या शब्दाचा व्यवहारातील उपयोग, सूचित गर्भित अर्थासह विस्ताराने अशोक श्री. रानडे यांनी विवेचन केले आहे. हे विवेचन प्रत्येक मराठी भाषिकास उपयुक्त तर ठरणार आहेच पण जे कोणी नव भाषक असतील त्यांनाही या प्रकल्पाचा उपयोगच होणार आहे. एवढेच नव्हे तर विविध स्पर्धा परीक्षांचा अभ्यास करत असताना या प्रकल्पाचा उपयोगच होणार आहे.

पत्रकारिता, ललित साहित्य, व्यवहार ज्ञान, स्पर्धा परीक्षा, भाषिक आकलन आणि उपयोजन या व इतर अनेक कला कौशल्य (ललित कला) यासाठी या 'शब्दयात्रा' प्रकल्पाचा उपयोग होणार आहे. म्हणून या

Mauli Mahavidyalaya Wadala EST 2000

प्रकल्पाचे मूल्य उच्च दर्जाचे आहे एकूण
५७ पानांचा हा प्रकल्प आहे प्रत्येक पानावरती
तीन शब्द बसवले आहेत म्हणजे एकूण
१५० शब्दांचा परिचय त्याच्या आणि वैशिष्ट्या
सह, उत्पतीसह परिचित होणार आहे.

संपादक मंडळाने हा प्रकल्प मेहनत घेऊन
पूर्ण केला आहे. यासाठी, डॉ. सुवर्णा गुंड यांचे
मार्गदर्शन लाभले आहे. मुखपृष्ठ अतिशय
कलापूर्णतेने केले आहे. हा प्रकल्प वाचल्या
नंतर प्रत्येकाच्या ज्ञानात भर पडणार आहे.
हे संकलन केवळ संकलन नाही तर तो एक
मौलिक ठेवा आहे. तो यावर्षीच्या विद्यार्थ्यांनी
वाचकांसाठी, मराठी विभागासाठी जतन करून
ठेवला आहे. यातून भाषिक विकासच होईल.
मराठी भाषा संवर्धनही करता आले हे या
विद्यार्थी संपादक मंडळाचे खूप मोठी यशस्वी
प्रकल्पाकृती आहे.

Mauli Mahavidyalaya Wadala EST 2000

» शब्दयात्रा

अशोक श्री. रानडे

# मावळती

सूर्योदय आणि सूर्यास्त यांवरून 'उगवती' आणि 'मावळती' हे दिशावाचक शब्द तयार झाले. सूर्य ज्या बाजूने उगवतो, ती 'उगवती' (पूर्व दिशा) आणि जिकडे मावळतो, ती 'मावळती' (पश्चिम दिशा). 'उगवत' आणि 'मावळत' ही स्त्रीलिंगी नामेही त्याच अर्थी आहेत. मावळत आणि मावळती यांपैकी कोणत्याही शब्दाची रूपे 'मावळतीकडे', 'मावळतीला', 'मावळतीकडून' अशी समानच होतात. उदाहरणार्थ 'सूर्य मावळतीकडे झुकला'; 'मावळतीचे रंग' इत्यादी. मावळत आणि मावळती हे शब्द 'मावळणे' या क्रियापदापासून तयार झाले आहेत. 'मावळणे' म्हणजे अस्त होणे, ओसरणे, नाहीसे होणे इत्यादी. 'मावळणे' शब्दाचा उगम संस्कृतमधील 'म्लै' या धातूमध्ये आहे. 'म्लै'च्या अर्थांमधील 'क्षीण होणे', 'फिका होणे', 'हळूहळू नाहीसा होणे' हे येथे लक्षात घेण्याजोगे आहेत. 'मावळणे'च्या संदर्भात सूर्यप्रकाशाशी या तिन्ही अर्थांची संगती लागते. संपणे, खालावणे, नाहीसे होणे या अर्थसंदर्भात 'मालवणे' आणि 'मावळणे' या क्रियापदांमध्ये साम्य आहे. 'मालवणे'चेही मूळ 'म्लै' धातूमध्ये आहे. आधी 'मालवणे' शब्द तयार झाला असावा आणि त्यात मधल्या दोन अक्षरांची अदलाबदल होऊन, तसेच 'ल'चा 'ळ' होऊन 'मावळणे' शब्द झाला असावा.

'मावळ' शब्द 'मावळणे'पासूनच बनला. महाराष्ट्रातल्या काही विशिष्ट भागांना 'मावळ' म्हणतात. सह्याद्रीच्या पूर्व उताराला लागून असलेल्या या भागांना विशिष्ट नावे आहेत. 'मावळा' म्हणजे मावळातला रहिवासी.

» शब्दयात्रा

अशोक श्री. रानडे

# राजरोस

विनानिर्बंध, मुक्तपणे, विनासंकोच अशा अर्थांनी 'राजरोस' हे क्रियाविशेषण रूढ आहे. उदाहरणार्थ 'संचारबंदी आता पूर्णपणे उठली आहे. आता मी राजरोस बाहेर जाऊ शकतो.' 'राजरोस'मधील 'रोस' हे 'रोशन' या फारसी शब्दावरून झालेले मराठीतले रूप आहे. 'रोशन' हे फारसीमधील विशेषण आहे. त्याच्या अर्थांमध्ये प्रकाशमान, चकचकीत, जाहीर, स्पष्ट आदींचा समावेश आहे. मराठी शब्दकोशात 'राजरोस' शब्द 'राजा' शब्दापासून झालेल्या सामासिक शब्दांमध्ये आढळतो. संस्कृतमधील 'राजन्' शब्दाचे प्रथमा विभक्तीचे एकवचनी रूप 'राजा.' समास होताना 'राज' असेही रूप होते. (उदाहरणार्थ राजकुल, राजपुत्र, राजपुरोहित इत्यादी.) 'राज' शब्द मराठीत 'राज्य' अशाही अर्थी सामासिक शब्दांमध्ये आढळतो. (उदाहरणार्थ राजपत्र, राजशिष्टाचार.) 'राजरोस' शब्दाचा संबंध राजाशी असेल, तर 'राजाप्रमाणे' असा त्यातल्या 'राज'चा अर्थ घेतल्यास 'राजरोस'च्या अर्थांची संगती लागते. 'रोशन' शब्दाच्या 'जाहीर' या अर्थाचा 'राजरोस'शी संबंध असा, की जे गुप्त नाही, ते जाहीर; म्हणजेच उघडउघड. 'प्रकाशमान' याही अर्थाचा 'राजरोस'शी संबंध आहे. जे कृत्य अंधारात (म्हणजेच गुप्तपणे) केलेले नाही, प्रकाशात म्हणजेच उघडउघड केलेले आहे, ते 'राजरोस'मध्ये गृहीत असते.

'राजरोस'चा संबंध राजाशी न जोडता थेट 'राज्' या धातूशी जोडला, तरीही तो अर्थाशी सुसंगत ठरतो. 'राज्' धातूचा एक अर्थ 'प्रकाशणे' असा आहे. त्या बाबतीत 'रोशन'शी तो जुळतो.

» शब्दयात्रा

अशोक श्री. रानडे

# बाळकडू मिळणे

कोणत्याही विद्येचे, कलेचे, व्यवसायाचे संस्कार अगदी बालपणापासून होणे, अशा अर्थाने 'बाळकडू मिळणे' अथवा 'बाळकडू असणे' हा वाक्प्रचार रूढ आहे. उदाहरणार्थ 'उस्ताद झाकिर हुसेन यांना त्यांचे वडील उस्ताद अल्लारखा खाँ यांच्याकडून तबल्याचे बाळकडू मिळाले.' 'डोंगरदऱ्यांतल्या आदिवासींना अवघड वाटांनी चढउतार करण्याचे आणि कष्टमय जीवनाचे बाळकडूच असते.' तान्ह्या मुलांना रोज पाजली जाणारी 'गुटी' हा 'बाळकडू' या नपुसकलिंगी शब्दाचा मूळचा अर्थ. या गुटीला 'घुटी' असेही म्हणतात. विविध औषधी जिन्नस दुधात उगाळून गुटी तयार केली जाते आणि बोंडल्याने पाजली जाते. (बोंडले हा नपुसकलिंगी शब्द आहे. त्याला 'गोकर्ण' असेही म्हणतात. तान्ह्या मुलाला दूध पाजण्याचे ते साधन असते. त्याचा आकार गाईच्या कानासारखा असतो.) गुटीची चव कडवट असल्यामुळे तिला 'बाळकडू' म्हणत असावेत. या शब्दाच्या अर्थाला व्यापक स्वरूप येऊन 'संस्कार', 'वळण' असा अर्थ प्राप्त झाला आणि त्यातून हा वाक्प्रचार रूढ झाला.

संस्कारांची क्रिया अप्रत्यक्ष रीतीनेही होत असते. उदाहरणार्थ एखाद्या गवयाने मुलांना प्रत्यक्ष शिकवले नाही, तरी घरातले संगीतमय वातावरण, रोज कानावर पडणारे गायन यांतून मुले वडिलांचे अनुकरण करू लागतात. पुढची प्रगती त्या- त्या मुलांवर वा मुलीवर अवलंबून असते. संस्कारांना महत्त्व आहेच; पण त्यांचा योग्य उपयोग करणे, हेसुद्धा महत्त्वाचे.

Mauli Mahavidyala EST

» शब्दयात्रा

अशोक श्री. रानडे

# छाननी

खरे-खोटे, अस्सल-नक्कल, योग्य-अयोग्य याविषयी निष्कर्ष काढण्यासाठी उपलब्ध माहितीची वा पुराव्यांची बारकाईने जी तपासणी केली जाते, तिला 'छाननी' म्हणतात. कोणताही वादाचा विषय वा तक्रार या संदर्भात जे दावे-प्रतिदावे केले जातात, त्यांवर निर्णय घेण्यासाठी छाननी आवश्यक असते. (छाननी करणाऱ्या व्यक्ती सक्षम व नि:पक्षपाती असणे, हेही आवश्यकच.) 'छाननी' शब्द 'छान' या स्त्रीलिंगी नामापासून तयार झाला. 'छान'च्या अर्थांमध्ये चाळणी, शोध, तपास इत्यादींचा समावेश आहे. ('सुंदर', 'चांगले' या अर्थाचे 'छान' हे विशेषण वेगळे. छाननीतल्या 'छान'शी त्याचा काहीही संबंध नाही.) शोध, तपास या 'छान' शब्दाच्या अर्थांची तीव्रता 'छाननी'मध्ये वाढली. 'छान' हा शब्द संस्कृतमधील 'शान' या पुल्लिंगी नामापासून बनला. (मराठीतला 'शान' शब्द अरबी भाषेतून आला आहे. संस्कृतमधील 'शान'शी त्याचा संबंध नाही.) कसोटीचा दगड (सोन्याचा कस तपासण्याचा दगड) हा 'शान'चा एक अर्थ. 'शान'चे मूळ 'शान्' या धातूमध्ये आहे. 'कसाला लावणे' (सोन्याचा कस किंवा कोणत्याही गोष्टीची गुणवत्ता तपासणे) हा 'शान्' या धातूचा अर्थ छाननी या क्रियेशी सुसंगत आहे.

'छान' या शब्दापासून 'छानणे' हे क्रियापद तयार झाले. छानणे म्हणजे छाननी करणे, निवडून काढणे, चाळणे, गाळणे इत्यादी. हिंदीतल्या 'छानबीन' शब्दाचा अर्थ 'छाननी'शी जुळणारा आहे.

» शब्दयात्रा

अशोक श्री. रानडे

# स्त्रोत

लिहिताना वा कळफलकावर (कीबोर्डवर) अक्षरजुळणी करताना ज्या शब्दांबाबत चूक होण्याचा संभव मोठ्या प्रमाणावर असतो, त्यांत स्रोत आणि स्राव हे शब्द आहेत. या दोन्ही शब्दांमध्ये जे पहिले अक्षर आहे, त्यात 'स'ला 'र' जोडलेला आहे; 'स'ला 'त्र' नव्हे. चुकून हे शब्द 'स्त्रोत' व 'स्त्राव' असे लिहिले जातात. 'स्र' आणि स्त्र' ही अक्षरे नीट पाहिली, तर फरक लक्षात येईल. स्रोत आणि स्राव हे दोन्ही शब्द संस्कृतमधून आले. दोन्हींचे मूळ 'स्रु' या धातूमध्ये आहे. (याही शब्दात 'स'ला 'र' जोडलेला आहे.) 'स्रु' म्हणजे पाझरणे, वाहणे, गळणे, बाहेर पडणे इत्यादी. 'स्रु'पासून स्रोतस् हे नपुसकलिंगी नाम तयार झाले. त्यावरूनच मराठीत 'स्रोत' शब्द रूढ झाला. (मराठीत 'स्रोत' पुल्लिंगी आहे.) नदी, लोंढा, प्रवाह, लाट हे या शब्दाचे मूळ अर्थ. सध्या 'सोर्स' या इंग्रजी शब्दाचा प्रतिशब्द म्हणून 'स्रोत'चा वापर होतो; त्यात नेमकेपणा नाही. 'सोर्स'चा अर्थ 'मूळ', 'उगम'. 'स्रोत'चा तो अर्थ नाही.

'स्राव' म्हणजे पाझर, झरा, गळती इत्यादी. मुख्यत: शरीराच्या संदर्भात या शब्दाचा वापर होतो. (उदाहरणार्थ लाळ, कफ इत्यादी.) इंग्रजीतल्या 'सिक्रीशन' शब्दाचा प्रतिशब्द म्हणूनही हा शब्द रूढ आहे. 'स्रवणे' या क्रियापदाचे अर्थ पाझरणे, ठिबकणे. 'स्रवण' असाही शब्द स्राव या अर्थी आहे.

Mauli Mahavidyalaya Wadala EST 2000

त्यातही हात धुताना नळ सुरू राहिला, तर पाण्याचा वापर

सुदृढ राहू शकत नाही, हा धडा आपण घालून

» शब्दयात्रा

अशोक श्री. रानडे

# संक्रमण

एका अवस्थेतून दुसऱ्या अवस्थेत जाण्याची क्रिया, अशा अर्थी 'संक्रमण' शब्द रूढ आहे. हा शब्द संस्कृतमधून थेट आला. त्याचे इतरही अर्थ आहेत; पण प्रामुख्याने तो अवस्थेच्या (स्थितीच्या) बदलासंदर्भात वापरला जातो. इंग्रजीतल्या 'ट्रॅन्झिशन' शब्दाचा प्रतिशब्द म्हणूनही तो रूढ आहे. संस्कृतमधील 'क्रम्' या धातूच्या अर्थांमध्ये 'चालणे', 'प्रवास करणे', 'जवळ जाणे' इत्यादींचा समावेश आहे. 'सहित' या अर्थाचा 'सं' हा उपसर्ग 'क्रम' धातूमागे लावला (सं+क्रम्), की त्यापासून 'संक्रम' आणि 'संक्रमण' हे शब्द तयार होतात. 'संक्रमण'चा एक अर्थ 'बरोबर (सह) जाणे' असा आहे. 'स्थलांतर' हा 'संक्रम' व 'संक्रमण' या शब्दांचा एक समान अर्थ आहे. आपण मराठीत ज्याला 'संक्रांत' म्हणतो (संस्कृत शब्द 'संक्रांति'), तोदेखील 'संक्रम' व 'संक्रमण'चा समान अर्थ आहे. सूर्याचा वा सूर्यमालेतल्या ग्रहाचा एका राशीतून दुसऱ्या राशीत प्रवेश, हा 'संक्रांत' शब्दाचा अर्थ. सूर्याचा मकर राशीत प्रवेश म्हणजे मकरसंक्रमण वा मकरसंक्रांत (सूर्याचे भासमय भ्रमण येथे गृहीत आहे. प्रत्यक्षात पृथ्वी सूर्याभोवती फिरते, हे आपल्या सर्वांना माहीत आहे.)

सध्या कोरोना विषाणूसंदर्भातल्या बातम्यांमध्ये हिंदीत जो 'संक्रमण' शब्द वापरला जातो, त्याचा मराठीतला अर्थ 'संसर्ग'. दोन्ही शब्द संस्कृतमधून आलेले; पण भाषेनुसार अर्थाचे वळण बदलते, हेच यावरून दिसते.